Subject :- Sociology Date :- 06/05/2020 ①
Class :- D-II (H) Paper :- 3rd & Subsidiary
Topic :- अनुसूचित जनजाति की समस्या और समाधान
By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher Marwari College, Darbhanga
Online Study Material No :- 69

विषय-प्रवेश

समस्याएँ सार्वभौमिक है। भिन्न-भिन्न समाजों एवं समुदायों में समस्याएँ भिन्न-भिन्न हो सकती है, किन्तु समस्याएँ हर समुदाय में पायी जाती है। आदिम समाजों एवं जनजातियों की समस्याएँ मानवशास्त्रीय अध्ययन के बाद मुख्य रूप से प्रकाश में आयी है। जनजातिय समस्याओं का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक स्वास्थ्य सम्बन्धी, शिक्षा सम्बन्धी इत्यादि भागों में विभाजित किया जा सकता है।

आर्थिक समस्या

आर्थिक समस्या में निर्धनता की समस्या प्रमुख कही जा सकती है। उनके पास कृषि करने के लिए भी भूमि की कमी है। फलस्वरूप कृषि से जो कुछ होता है उससे कुछ माह ही गुजारा होता है। महाजनो के कारण उनकी आर्थिक स्थिति पहले से भी अधिक दयनीय हो गयी साहुकार जनजातिय लोगो को कर्ज देकर मूल से भी अधिक सूद वसूल करते है। अपने पैसे के बदले सस्ते किमत पर अनाज खरीद लेते है और उनके जमीन भी महाजनों के कर्ज चुकाने में बिक जाती है। देशी शराब पीने की आदत ने उनके आर्थिक जीवन को और अधिक दयनीय बना दिया है। नये ढंग से खेती करने के लिए यंत्र, उपकरण के ज्ञान का अभाव ने उर्वरक एवं बीज के ज्ञान का अभाव सिचाई की असुविधाओं एवं शिक्षा की कमी भी जनजातिय आर्थिक जीवन की समस्याओं से सम्बन्धित है। क्योंकि यह सभी समस्याएँ उनकी निर्धनता में वृद्धि लाने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से योगदान देती है। सरकार की जंगल (संरक्षण नीति) के कारण उनमें आर्थिक संकट की स्थिति उत्पन्न हो गयी है। पहले लोग जंगलों से लकड़ियाँ लाकर एवं बेचकर कुछ पैसा प्राप्त करते थे जिससे कुछ हद तक जीवन-यापन का कार्य चलता था। जंगलो से प्राप्त शिकार एवं फल भी

Scanned with CamScanner

इसकी जीविका के मुख्य साधन थे, किन्तु जंगल के सम्बन्ध में सरकार की नीति के कारण वनस्पतियों के उपयोग पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। फलस्वरूप इनकी आर्थिकस्थिति बहुत दयनीय हो गयी है।

औद्योगिक क्षेत्रों चाय बगानो एवं खानों में कार्य करने वाले मजदूरों को कम मजदूरी देना भी उनके आर्थिक समस्या को बढाने में सक्षम सिद्ध होती है एवं स्वयं एक समस्या बन गयी है। उन्हे रहने आदि के लिए मकान आदि की व्यवस्था नही है। और काम करने की अवस्था भी सोचनीय है। ठेकेदार आदि के लिए अप्रत्यक्ष भर्ती कर लेने की प्रथा उनके शोषण का रास्ता और भी विस्तृत कर होती है। डॉ० डी० एन० मजूमदार ने उनकी इसस्थिति की तुलना पशुओं से कि है।

निराकरण के उपाय

जनजातियों की आर्थिक दशा सुधारने के लिए निम्नांकित सुझाव किये जा सकते है!-

1. प्रत्येक परिवार को खेती के लिए पर्याप्त भूमि देने की व्यवस्था करनी चाहिए। यह कार्य सरकारी एवं गैर सरकारी प्रयत्नों द्वारा पूरा किया जाना चाहिए।
2. सरकारी कानून द्वारा इनकी जमीन की बिक्री पर जो प्रतिबन्ध लगाया गया है। उसे कार्य रूप में परिणत कर उनके आर्थिक स्थिति में सुधार लाया जा सकता है।
3. सरकार की ओर से उन्हे बीज, बैल और खेती के अन्य उपकरण खरीदने के लिए आर्थिक सहायता की जानी चाहिए।
4. कानून द्वारा बेगार एवं कम वेतन आदि का अंत होना चाहिए।
5. सिंचाई का समुचित प्रबन्ध होना चाहिए।
6. अधिक से अधिक सहकारी समितियों का विकास किया जाना चाहिए।
7. गृह उद्योग के सम्बन्ध में जनजातियों को उचित शिक्षा देने की व्यवस्था करनी चाहिए।
8. उन उद्योग क्षेत्रों में जहाँ जनजातीय लोग ज्यादा संख्या मे पाए जाते हैं श्रमिक कल्याण कार्य विस्तृत रूप से होना चाहिए। एवं अधिकाधिक उनकी नियुक्ति की भी व्यवस्था

होनी चाहिए।

सामाजिक समस्या

जनजातीय लोगों की अनेक सामाजिक समस्याएँ भी हैं। जिसमें बालविवाह, कन्यामूल्य, युवागृहों का प्रचलन वेश्यावृत्ति इत्यादि मुख्य है। सभ्य समाजों के सम्पर्क में आने के कारण उनमें भी बाल विवाह का प्रचलन हुआ। यह बाल-विवाह स्वयं एक समस्या है जो जनसंख्या की वृद्धी, आर्थिक संकट तथा स्वास्थ से सम्बन्धित अनेक समस्याओं को जन्म देती है। जनजातियों में कन्या मूल्य का प्रचलन भी एक समस्या मानी जाती है। कन्यामूल्य देने में असमर्थ व्यक्ति अपहरण विवाह इत्यादि तरीके से जीवनसाथी प्राप्त करने की कोशिश करता है। ऐसी स्थिति में सामाजिक अपराध की संख्या में वृद्धि होती है। साथ साथ युवागृह का कार्यरत रहना भी जनजातियों की एक समस्या कही जा सकती है। इससे सामाजिक एवं धार्मिक मूल्यों का ह्रास होता है। तलाक की समस्या की जड़ में अन्य कारणों के सामन्जस्य युवागृह की संस्था भी महत्वपूर्ण कारक सिद्ध होता है। जनजातियों से फायदा उठाकर सभ्य समाज के लोग उनकी पत्नीयों एवं लड़कियों के साथ अनुचित यौन सम्बन्ध स्थापित करते हैं जिसके फलस्वरूप वेश्यावृत्ति तथा गुप्त रोग इत्यादि समस्याओं का जन्म होता है। जनजातिय समुदायों में पूर्व वैवाहिक तथा अतिरिक्त वैवाहिक यौन सम्बन्ध स्थापित करना भी सामाजिक समस्या कहा जा सकता है, क्योंकि इससे भी विवाह विच्छेद की समस्या में वृद्धि होती है।

निकारण के उपाय

सामाजिक समस्याओं को सुलझाने के लिए निम्नांकित सुझाव दिये जा सकते हैं:-

1. बाल-विवाह को रोकने के लिए जनमत को तैयार करना चाहिए तथा व्यक्तियों के विचारों में परिवर्तन करना चाहिए।
2. कन्यामूल्य के प्रथा को भी जनमत के द्वारा रोकने का प्रयत्न करना चाहिए।
3. युवागृह के संस्था को बन्द कर उसे सामाजिक शिक्षा देने का केन्द्र बनाना चाहिए।

Scanned with CamScanner

4. वेश्यावृत्ति आदि समस्या को दूर करने के लिए उनके आर्थिक स्थिति में सुधार लाना चाहिए।

सांस्कृतिक समस्याएँ

जनजातीय सांस्कृतिक समस्याओं में अन्तरजातीय सांस्कृतिक भिन्नता भाषा सम्बन्धी समस्या जनजातीय ललित कलाओं का ह्रास तथा धार्मिक संस्था जनजातिय क्षेत्रों मीशन संस्थाओं के प्रभाव से जनजाति समुदाय अपरिवर्तित जनजाति एवं परिवर्तित जनजाति दो समूहों में विभाजित हो गया है। जनजातियों के इन दो समूहों सामाजिक मूल्य, धार्मिक विश्वासों एवं रहन-सहन के स्तर में बहुत भिन्नता आई फलस्वरूप सांस्कृतिक विच्छेद सामाजिक तनाव एवं सामाजिक दूरी अनेक समस्याओं का जन्म हुआ जिसके कारण आयेदिनों में वर्ग संघर्ष की समस्या भी उत्पन्न होती रहती है। बाहरी संस्कृति के सम्पर्क में आने से दो भाषावाद की समस्या उत्पन्न हुयी वे अपनी भाषा से उदासिन होने लगे। इसके कारण जनजातिय लोगों में आपस के सांस्कृतिक आदान-प्रदान में बाधा तो होती है। साथ ही साथ सामुदायिक भावना का भी ह्रास होता है। बाहरी संस्कृति के सम्पर्क में आने के कारण इनकी ललित कलाएँ, संगीत, नृत्य आज दिन-प्रतिदिन पतन की ओर जा रहा है। धार्मिक विश्वासों में परिवर्तन के कारण एकता की भावना का ह्रास हुआ। फलस्वरूप एक ओर सामुदायिक एकता और संगठन टूटने लगा और दूसरी ओर पारिवारिक तनाव, भेदभाव, लड़ाई झगड़े, विघटन की समस्या बढ़ती गयी।

निराकरण के उपाय

उपरोक्त समस्या को दूर करने के लिए निम्नांकित सुझाव किए जा सकते हैं:-

1. धार्मिक समस्याओं का सबसे आसान हल यह होगा कि शिक्षा के द्वारा इनके धार्मिक कट्टता को एक वैज्ञानिक स्तर पर ले आया जाय।
2. जनजातीय सम्बन्धी सभी योजनाओं शिक्षा उन्ही की भाषा तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुसार होनी चाहिए ताकि अपनी संस्कृति के प्रति अनास्था के भाव उनके मन से मिट जाए एल्विन ने जनजातिय, ललितकलाओं की रक्षा के लिए एक कालेज खोलने का सुझाव दिया है।

Scanned with CamScanner

शैक्षणिक समस्या

जनजातीय समस्याओं में शिक्षा की कमी एक प्रमुख समस्या मानी जाती है। जनजातीय लोग आज भी बहुत अशिक्षित है। 1961 ई० की जनगणना के अनुसार सामान्य जनसंख्या की शिक्षा दर 24% जबकि आदिम जातियों में शिक्षा की दर 8.52% थी। अपनी अज्ञानता के कारण ये अनेक अंधविश्वासों के शिकार बने हुये है। इस अंधविश्वास के कारण वे महाजनों के शोषण के शिकार बनते जा रहे है। तथा उनकी आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय होती जा रही थी। इसाई मिशन एवं सरकार की शिक्षा नीति के कारण उनमें भी शिक्षा का प्रसार हो रहा है किन्तु जिस तरह से उनमें आधुनिक शिक्षा फैलायी जा रही है वह भी गलत प्रतित होता है। इस आधुनिक शिक्षा के कारण शिक्षित जनजातिय व्यक्ति अपनी संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं। साथ ही उनमें भी शिक्षित बेकारी की समस्या भी उत्पन्न हो रही है। इन समस्याओं को दूर करने के लिए डॉ० विश्वास के अनुसार निम्नांकित सुझाव किये जा सकते है :-

1. जनजातियों की शिक्षा उनकी अपनी भाषा के माध्यम से दी जानी चाहिए तथा प्रादेशिक भाषा को गौण स्थान मिलना चाहिए।
2. शिक्षा के साथ-साथ नृत्य, संगीत, खेल तथा अन्य जनजातीय मनोरंजन का भी उचित प्रबन्ध होना चाहिए।
3. शिक्षा के साथ-साथ पेशा सम्बन्धी प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए।
4. प्राथमिक स्कूल तथा व्यावसाय सम्बन्धी स्कूल में दो प्रकार के स्कूल खोले जाने चाहिए तथा इनमें व्यावसाय से सम्बन्धित व्यावहारिक शिक्षा होनी चाहिए। शिक्षित बेकारो की समस्या दूर करने के लिए अधिक से अधिक सरकारी नौकरियों में उनकी नियुक्ति करनी चाहिए।

स्वास्थ सम्बन्धी समस्या

स्वास्थ सम्बन्धी समस्या भी जनजातीय लोगों की एक मुख्य समस्या है। गरीबी के कारण वे पौष्टिक पदार्थों का उपयोग नही कर पाते है जिसका असर उनके स्वास्थ पर भी पड़ता है। साथ ही अनेक रोगों का शिकार भी वे होते हैं। गन्दे

Scanned with CamScanner

वातावरण में रहने के कारण एवं सफाई का मूल्य नहीं समझने के कारण हैजा, चेचक तथा अनेक प्रकार के रोगों के शिकार बने रहते हैं। बिमारियों के इलाज के सम्बन्ध में ज्ञान का प्रसार डॉक्टर एवं दवा-दारु पर विश्वास कम, यातायात के साधन के अभाव में दुर्गम प्रदेशों में डॉक्टर से पहुँच करने की असमर्थता, सफाई से न रहना, गन्दे वस्त्र का प्रयोग, पौष्टिक आहार की कमी आदि उनकी स्वास्थसम्बन्धी समस्याओं के प्रमुख कारण हैं। इस समस्या को दूर करने के लिए अनुसूचित जनजाति आयोग ने अपनी 1956-57 की रिपोर्ट में निम्नांकित सुझाव दिया है:-

1. जनजातियों को दुध तथा अन्य उपयोगी वस्तुओं के उपयोग की उपयोगिता का ज्ञान करना चाहिए।
2. जनजातियों के लिए चलते-फिरते अस्पतालों की व्यवस्था होनी चाहिए।
3. जनजातिय लड़कों एवं लड़कियों को क्रमशः कम्पाउण्डर तथा नर्स की ट्रेनिंग लेनी चाहिए।
4. कोई भी ऐसा कदम नहीं उठाना चाहिए जो इनके जीवन आदतों और प्रथाओं को धक्का पहुँचावे।

S. N. Choudhary
Marwari College
L. N. M. U

Scanned with CamScanner